कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, जनवरी 2026 | वर्ष 4, अंक 27, पृष्ठ 4

रामलाल आनंद महाविद्यालय में दिल्ली विवि के कुलपति प्रो. योगेश सिंह, अधिष्ठाता महाविद्यालय प्रो. बलराम पाणि, दक्षिणी परिसर निदेशक प्रो. रजनी अब्बी, रजिस्ट्रार डॉ. विकास गुप्ता, महाविद्यालय चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार, प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, एनएसएस अधिकारी डॉ. नरेन्द्र विश्नोई व एनसीसी अधिकारी मेजर प्रो. संजय कुमार ने ग्रीन कैम्पस–क्लीन कैम्पस रिपोर्ट का विमोचन किया (बाएं), स्वच्छता अभियान की शपथ लेते शिक्षक और विद्यार्थी (दाएं)।

दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर हुआ भव्य आयोजन

राष्ट्र की चेतना का गान वंदे मातरम...

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। राष्ट्र गीत वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में 6 जनवरी 2026 को भव्य समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह थे।

अतिथि के रूप में महाविद्यालय अधिष्ठाता प्रो. बलराम पाणि, दक्षिणी परिसर की निदेशक प्रो. रजनी अब्बी, रजिस्ट्रार डॉ. विकास गुप्ता और महाविद्यालय के चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार मौजूद रहे। संचालन कर रहे विवि के एनसीसी अधिकारी मेजर प्रो. संजय कुमार ने काव्यमय पंक्तियों से कुलपति और अतिथियों की अगवानी की तो अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर वंदे मातरम् के रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलगीत व वंदे मातरम् के गायन के पश्चात कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि विवि में रामलाल आनंद महाविद्यालय की विशिष्ट पहचान है। यह मूल्यों के संस्कार निभाने का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यह विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बनाने का काम जिम्मेदारी से कर रहा है। विश्वविद्यालय का मान बढ़ाने का काम कर रहा है। इसी कड़ी में आज यह वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में स्मरणोत्सव मनाने की दिशा में आयोजन कर रहा है। कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने 'राष्ट्र की चेतना का गान वंदे मातरम' गीत की पंक्तियां उद्धृत करते हुए कहा कि वंदे मातरम् ने भारत के जनमानस को जगाने का काम किया है। बीते 150 वर्षों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह संघर्ष के दिन रहे हैं। अंग्रेजों से छुटकारे के दिन रहे हैं। देश के बनने के दिन रहे हैं। इस भाव को आज की पीढ़ी को समझने की आवश्यकता है।

आज की पीढ़ी इस बात का अच्छे से स्मरण करे, इसीलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक वर्ष तक वंदे मातरम् का स्मरणोत्सव मनाने की मुहिम शुरू की है। संसद के दोनों सदनों में चर्चा हुई है, जिसे देश और दुनिया ने देखा है। कुलपति ने विद्यार्थियों को वंदे मातरम् का महत्व बताते हुए कहा कि जब भी राष्ट्रभक्ति की बात होगी वंदे मातरम का उल्लेख किया जाएगा। उन्होंने इसी सन्दर्भ में 'जागृति' और 'आनंदमठ' फिल्में देखने और महाविद्यालय में उनकी स्क्रीनिंग कराने का सुझाव दिया। उनका कहना था कि आज देश की चिंता कम लोग अपनी चिंता ज्यादा करते हैं। वंदे मातरम् इसके विपरीत देश और समाज को मजबूत बनाने का संदेश देता है। इस संदेश को मजबूती देने के लिए हम शिक्षकों पर बड़ी जिम्मेदारी है। हम जिस पीढ़ी को पढ़ा रहे हैं वह आजादी के 100 वर्ष पूरे होने के दौरान जिम्मेदार और बड़े पदों पर होगी। वह पीढ़ी देश को आगे ले जाएगी।

- वंदे मातरम् ने भारत के जनमानस को जगाया : कुलपति प्रो. योगेश सिंह
- वर्तमान के साथ खुद को सुधारना होता है : डॉ. जिगर इनामदार

अपना वक्तव्य पूरा होने के साथ कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने शिक्षकों और विद्यार्थियों को स्वदेशी सोच अपनाने की शपथ दिलाई। रामलाल आनंद महाविद्यालय के चेयरमैन डॉ. जिगर इनामदार ने कहा कि इतिहास को याद करने के साथ हमें वर्तमान को सुधारना होता है। उसे सुधारने के साथ अपने को सुधारना होता है। हम अपने को ठीक करने के लिए कितना सोचते हैं। हमें जो जिम्मेदारी दी गई है उसे हम कितना प्रामाणिक ढंग से करते हैं। हमें जो काम दिया गया है उसे प्रामाणिकता से करें, वही बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इससे पहले रामलाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने वंदे मातरम् के स्मरणोत्सव रूपी आयोजन में अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने दिल्ली विश्वविद्यालय को दिशा और गति देने का काम किया है। विवि लगातार ऊंचाइयों की तरफ बढ़ रहा है।

अपने अब तक के कार्यकाल में आपने वर्षों से रुकी करीब पांच हजार स्थायी नियुक्तियां की हैं। करीब नौ हजार प्रोमोशन हुए हैं। दो हजार से अधिक योजनाओं को मंजूरी मिली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने वाला यह देश का पहला विश्वविद्यालय है। आपके काम की प्रतिबद्धता को देखकर ही हमने उसे महाविद्यालय में लागू करने की कोशिश की है। प्राचार्य ने कहा कि सूर्य और आशा से किरण निकलती है, जो अंधकार को मिटा देती है। यही किरण कुलपति जी के नेतृत्व में महाविद्यालयों में पहुंची। उसी की देन है कि महाविद्यालय में 80 स्थायी नियुक्तियां हुईं। सभी कक्ष स्मार्ट बोर्ड से लैस हैं। कौशल विकास के तहत दस स्किल सेन्टर काम कर रहे हैं। इसमें अधिष्ठाता महाविद्यालय प्रो. बलराम पाणि, दक्षिणी परिसर की निदेशक प्रो. रजनी अब्बी सहित सभी की भूमिका महत्वपूर्ण है।

अंत में एनएसएस और एनसीसी के संयुक्त तत्वावधान में चलाए जा रहे ग्रीन कैम्पस–क्लीन कैम्पस अभियान की रिपोर्ट का विमोचन अतिथियों ने किया। विमोचन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के एनएसएस अधिकारी डॉ. नरेन्द्र विश्नोई और एनसीसी अधिकारी मेजर प्रो. संजय कुमार ने पूरी करवाई। एम्फी थिएटर के ग्राउंड फ्लोर पर हुए समारोह में सबसे पहले कुलपति का स्वागत प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने शाल और पौधा भेंट कर किया। महाविद्यालय अधिष्ठाता का स्वागत उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान ने किया। दक्षिणी परिसर निदेशक का स्वागत कल्चर कमेटी की संयोजक प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार ने किया।

रजिस्ट्रार का मेजर प्रो. संजय कुमार तो चेयरमैन का स्वागत स्टाफ काउंसिल की सचिव प्रो. वंदना गुप्ता ने किया। दस्तूर की टीम ने सरस्वती वंदना पेश की। अंत में राष्ट्रगान का सामूहिक गायन हुआ। समारोह के बाद कुलपति ने महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के स्टूडियो, माइक्रोबायोलॉजी, कंप्यूटर साइंस विभाग सहित कई लैब का निरीक्षण किया। परिसर में पौधा रोपा। पूरे समारोह का लाइव प्रसारण रेडियो तरंग 90.0 एफएम और स्टूडियो आरएलएसी पर किया गया। इस मौके पर हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, शिक्षक प्रो. प्रदीप शर्मा, प्रो. अर्चना गौड़, प्रो. राजेश सचदेवा, प्रो. सीमा गुप्ता, डॉ. रीटा जैन सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता व हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने 'कैम्पस कनेक्ट' का विमोचन किया।

कैम्पस कनेक्ट के दिसंबर अंक के विमोचन पर प्राचार्य ने कहा–

सॉफ्टवेयर कौशल निखारना चाहिए

शिवम कुमार

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के ई–न्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के दिसंबर अंक का विमोचन 19 जनवरी 2026 को किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अंक के संपादक अंकेश स्वर्ण और उपसंपादक आशीष राणा को बधाई दी। दोनों हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के दूसरे वर्ष के विद्यार्थी हैं।

विमोचन के दौरान प्राचार्य ने संपादक अंकेश स्वर्ण से सवाल किया कि जिस सॉफ्टवेयर के माध्यम से ई–न्यूज लेटर तैयार किया गया है, उससे उनकी तकनीकी और बुनियादी जानकारी कितनी सुदृढ़ हुई है। यह भी पूछा क्या यही सॉफ्टवेयर देश के विभिन्न समाचार पत्रों में प्रयोग किया जाता है। यह सॉफ्टवेयर पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए कितना उपयोगी है। इसका उत्तर देते हुए हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने बताया कि क्वार्क एक्सप्रेस सॉफ्टवेयर का उपयोग देश के अधिकांश समाचार पत्रों में किया जाता है। इस पर प्राचार्य ने कहा कि पाठ्यक्रम के हर विद्यार्थी को अपनी जरूरत के सॉफ्टवेयर और तकनीकी कौशल को निरंतर निखारते रहना चाहिए ताकि भविष्य में मीडिया जगत में वह अपनी मजबूत पहचान बना सकें।

फोटोग्राफी महज शौक नहीं, करियर का नया फोकस है

आज की डिजिटल क्रांति के दौर में फोटोग्राफी की परिभाषा पूरी तरह बदल चुकी है। अब कैमरा केवल पारिवारिक आयोजनों या यादों को सहेजने का साधन नहीं है। वह एक बहुआयामी और आकर्षक करियर विकल्प के रूप में स्थापित हो चुका है। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव, ई–कॉमर्स प्लेटफार्म की मांग डिजिटल विज्ञापनों के विस्तार ने प्रोफेशनल फोटोग्राफर्स के लिए सपनों की नई उड़ान का मार्ग प्रशस्त किया। आज की युवा पीढ़ी रूढ़िवादी बंधनों को तोड़ फैशन, वाइल्ड लाइफ, फूड और डेस्टिनेशन वेडिंग फोटोग्राफी जैसे

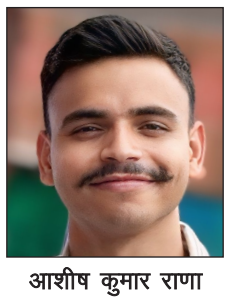

आशीष कुमार राणा

क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है।

इस क्षेत्र की ताकत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि स्टीव मैकरी की अफगान गर्ल वाली फोटो 1985 में नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका में छपी तो देखते ही देखते उन्हें वैश्विक पहचान मिली। उसे लोगों ने 'अफगान वॉर की मोनालीसा' कहा। इसी तरह से भारत के दिग्गज फोटोग्राफर रघु राय के कैमरे से कैद की गई भोपाल गैस त्रासदी की तस्वीरों ने फोटो पत्रकारिता के इतिहास में बड़ी छाप छोड़ी। तकनीक और रचनात्मकता के मेल ने इस क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि के द्वार भी खोल दिए। आज एक कुशल फ्रीलांस फोटोग्राफर विशिष्ट शैली और 'क्रिएटिव आई' के दम पर न केवल समाज में पहचान बना रहा बल्कि अच्छी खासी आय भी अर्जित कर रहा। अगर आप में धैर्य और जुनून का संतुलन है तो लेंस के पीछे खड़ा व्यक्ति दुनिया का नजरिया बदलने की क्षमता रखता है। इसी बदले नजरिए के साथ नए साल की बधाई देते हुए आपके सामने 'कैम्पस कनेक्ट' का यह अंक पेश है।

नरेश गोस्वामी की कृति को पाण्डुलिपि सम्मान

शाम्भवी

- कृति *कांवड़ यात्रा* को प्रथम समाज विज्ञान पुरस्कार
- भारतीय समाज को भारतीय दृष्टि से देखने की जरूरत

नई दिल्ली। हिंदी प्रकाशन जगत में मौलिक समाज विज्ञान की कमी को भरने की दिशा में एक बड़ी पहल हुई है। सेतु प्रकाशन समूह ने साल 2025 के लिए अपने प्रतिष्ठित पाण्डुलिपि पुरस्कार की घोषणा कर दी है, जो लेखक नरेश गोस्वामी को दिया गया। यह सम्मान उनकी कृति 'कांवड़ यात्रा : लोक धार्मिकता का नेपथ्य' के लिए प्रदान किया गया। इसके साथ कथा साहित्य में चौथा सेतु पाण्डुलिपि पुरस्कार संतोष दीक्षित के उपन्यास 'छाया सच' को दिया गया।

सड़क के समाजशास्त्र की मौलिक पड़ताल नरेश गोस्वामी की पुरस्कृत पाण्डुलिपि 'कांवड़ यात्रा' विषय और दृष्टि के लिहाज से हिंदी अकादमिक जगत में एक जरूरी हस्तक्षेप मानी जा रही है। सावन के महीने में उत्तर भारत की सड़कों पर कांवड़ यात्रियों को मीडिया और समाजशास्त्रीय विमर्श अक्सर भीड़ या उन्माद के चश्मे से देखता आया है, लेकिन नरेश गोस्वामी का शोध इस सतही नजरिए को खारिज करता है। चयन समिति के मुताबिक नरेश गोस्वामी ने अपनी कृति में इस यात्रा के नेपथ्य यानी पर्दे के पीछे की कहानियों को सामने रखा है। युवाओं की आकांक्षा और हाशिए के समाज की दावेदारी का एक मिला जुला रूप है।

सेतु प्रकाशन की यह पहल और नरेश गोस्वामी का चयन इस बात का संकेत है कि अब भारतीय समाज को भारतीय दृष्टि से देखने का समय आ गया है। निर्णायक मंडल ने पाया कि पुरस्कृत कृति में अकादमिक गहराई के साथ–साथ एक रोचक प्रवाह भी है, जो इसे आम पाठकों के लिए भी पठनीय बनाता है।

जानकारों का मानना है कि सेतु प्रकाशन की ओर से समाज विज्ञान के लिए अलग से श्रेणी बनाना हिंदी बौद्धिक जगत के लिए एक शुभ संकेत है। अब तक हिंदी में कविता, कहानियों और उपन्यास के लिए कई मंच थे, लेकिन गंभीर नॉन फिक्शन के लिए लेखकों को संघर्ष करना पड़ता था। पुरस्कार समिति के संयोजक ने बताया कि इन पुरस्कारों का उद्देश्य उन पाण्डुलिपियों को सामने लाना है जो इधर–उधर दबी रह जाती हैं।

नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में विगत 6 दिसंबर 2025 को सेतु वार्षिकोत्सव के तहत पुस्तक लोकार्पण और परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संतोष दीक्षित के उपन्यास 'छाया सच' और नरेश गोस्वामी की पुस्तक 'कांवड़ यात्रा' को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर मणीन्द्र नाथ ठाकुर और जीएन त्रिवेदी वक्तव्य दिया। समाज विज्ञान वाले सत्र की अध्यक्षता मधुलिका बैनर्जी ने की। अतिथियों का स्वागत सेतु प्रकाशन के अमिताभ राय ने किया तो धन्यवाद ज्ञापन अमिता पाण्डेय ने किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में लेखक, शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद रहे। हाल के बाहर सेतु प्रकाशन से प्रकाशित किताबों का स्टॉल लगाया गया, जहां से लोगों ने अपनी रुचि के हिसाब से किताबें भी खरीदीं।

सेतु प्रकाशन:प्रथम समाज विज्ञान पुरस्कृत कृति *कांवड़ यात्रा* का विमोचन।

बाजार की मांग, कीमत और समय

स्टॉक मार्केट में साइकोलॉजी मैनेजमेंट का अहम रॉल होता है : गौरव सिंह

पिछले दिनों सेल्स शेयर मार्केट के सीईओ गौरव सिंह रामलाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो 90.0 एफएम के पॉडकास्ट सीरीज 'हमारा बाजार' के मेहमान थे। उनसे हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की द्वितीय वर्ष की छात्रा खुशी प्रजापति ने शेयर मार्केट से जुड़ी बातचीत की। उन्होंने पेनी स्टॉक क्या होती है, शेयर कब खरीदनी चाहिए, एआई के इस्तेमाल से कैसे स्टॉक मार्केट में मदद ली जा सकती है, स्मॉल कैप, मिड कैप और लार्ज कैप क्या होता है–जैसे प्रश्नों का जवाब दिया। उस बातचीत के संपादित अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

TARANG 90.0 FM

सर, मार्केट में एंट्री करने से लेकर इतनी बड़ी फर्म का जो आपका सफर रहा है, वह कैसा रहा?

सबसे पहले पांचवीं क्लास में मैंने स्टॉक मार्केट के बारे में जाना था। वहां पर हमारे एक इतिहास के शिक्षक थे। उन्होंने मुझे पहली बार बताया कि मैंने इतने टन सीमेंट खरीद लिया। मैंने एक किलोग्राम सोना ले लिया। उनकी उम्र करीब साठ के आसपास होगी। ऐसे में हम कुछ स्टूडेंट्स थे, जो कहते थे कि बूढ़ा सठिया गया है। क्या बोल रहा है। मगर उस समय नहीं पता था कि ये स्टॉक मार्केट क्या होता है। वहां हम गोल्ड को भी ट्रेड कर सकते हैं। सीमेंट को ट्रेड कर सकते हैं। इस तरह जब मैं क्लास 11–12वीं में आया। जब मैंने चीजें जानीं तो मुझे समझ में आया कि हां यह सारी चीजें होती हैं। तब मैंने इकोनॉमिक टाइम्स और बहुत से ऑनलाइन मंचों से सीखना शुरू किया। उसके बाद नोएडा में आकर मेरी यात्रा शुरू होती है। जहां मैं कॉलेज के लिए आया।

आपने न्यूज पेपर या दूसरी जगह पढ़ा होगा, क्या आपने इस टॉपिक को समझने के लिए कोई किताब भी पढ़ी है?

मैंने किताब नहीं पढ़ी। मैंने यूट्यूब वीडियोज से सीखना शुरू किया था। मुझे एक चीज समझ में आई कि क्यों न उनसे सीखा जाए जिनके खून में ही स्टॉक मार्केट है। जहां 200 से 300 साल पुराने स्टॉक मार्केट का इतिहास रहा है।

आजकल कई यूट्यूब चैनल्स और टेलीग्राम पर हम देखते हैं कि बहुत सारा कंटेंट है। स्टॉक मार्केट से जुड़ी कई किताबें भी हैं। क्या यह विषय लगातार विकसित होता जा रहा है?

आप जो परिभाषा आज बनाओगे वह कल खत्म हो जाएगी। मार्केट चार चीजों से चलता है लिक्विडिटी, वोलेटिलिटी, प्राइस एंड टाइम। चारों चीजें हर टाइम चेंज हो रही हैं। जब भी कोई बुक आती है वह स्थिर होती है। दो साल पहले जिस लेखक ने बुक लिखी थी, आज वह बेकार है। उसकी कुछ चीजें ही काम आएंगी। जब हम बात करते हैं इन्वेस्टिंग की, ट्रेडिंग की तो उसका एक टाइम फ्रेम होता है कि वह चीज इस आइडियल केस में ही काम करेगी। मगर जब हम खुद उस क्षेत्र में उतरते हैं तो हमें अपनी खुद की चीजें खोजनी होती हैं। जैसे आप किसी बिजनेस बुक को पढ़कर बिजनेस नहीं कर सकते। इसकी वजह यह है कि बिजनेस की बुक में सबके लिए एक आदर्श बात लिखी हुई है कि ऐसा होना चाहिए। मगर वह सबके ऊपर अलग–अलग अप्लाई होता है। ऐसे ही स्टॉक मार्केट में कि आप बुक और वीडियो से रेफरेंस ले सकते हो। आप खुद की गलतियां आप खुद की सारी चीजों से ही सीख सकते हो, किसी वीडियो से नहीं। यह बात आपको ध्यान रखना होगा।

जैसे आपने पहली बार कोई शेयर खरीदा था तो उस समय क्या स्ट्रेटजी आपके दिमाग में आई थी इन्वेस्ट करने से पहले?

मैंने पहली बार 2020 में 500 रुपए से ट्रेड किया था। वह पैसे मैंने मम्मी से लिए थे। उस समय मेरी उम्र 18 वर्ष थी। उसके पहले मैंने एक बार कोशिश की थी, मगर मेरा डीमैट अकाउंट ओपन नहीं हुआ, क्योंकि पैन कार्ड माइनर का था। मैंने सबसे पहला स्टॉक लिया। वह आईडीया था, जो उस समय अराउंड तीन या चार रुपए में था। मैंने अराउंड 35 या 40 रुपए अर्न किए थे। यह काफी कम रिटर्न था, मगर मैंने प्रतिशत निकाला तो मुझे ठीक–ठाक रिटर्न मिला। वह भी दो घंटे में। मैंने सोचा कि मेरे पास 500 रुपए हैं। मैं ठीक से कमा सकता हूं। अगर मेरे पास 50 हजार रुपए होते या पांच लाख रुपए होते तो उसका ठीक प्रतिशत मैं कमाता। इसका मतलब एक अच्छी खासी रकम हमारे पास होती।

क्या आपने उस वक्त यह नहीं सोचा कि पहले इन्वेस्टमेंट शुरू करूं?

देखिए, ट्रेडिंग में रिस्क होता है। खुद से एनालिसिस करना पड़ता है। मैं यह नहीं बोलूंगा कि मैंने वह सब एनालिसिस के साथ किया था। मुझे नहीं पता था कि क्या होता है। बस मुझे यह था कि मैं पहली बार ट्रेडिंग करने जा रहा हूं। क्लिक कैसे करते हैं। बाय कैसे होता है। सेल कैसे होता हैं। जैसे नया मोबाइल आता है तो हम सब हर ऑप्शन को क्लिक करके देखते हैं कि इसमें क्या है। उसी तरह जब मैने पहला डीमैट अकाउंट खोला था तो ट्राई करने में ही पहला ट्रेडर किया। उसमें सबसे पहले लाभ ही हुआ। मार्केट सबसे पहले लाभ देता है। पहले ही दिन लाभ आया। मगर लाभ बहुत कम था, मगर प्रतिशत बहुत अच्छा था। मैंने सोचा कि बैंक पूरे साल में सात, साढ़े सात प्रतिशत रिटर्न देता है जो मैंने एक–दो घंटे में ही कमा लिया था।

आपने ट्रेडिंग की बात की। हमारे श्रोता जानना चाहेंगे कि किसी इंसान को शेयर कब खरीदना चाहिए–बढ़ते या घटते समय?

अगर फंडामेंटली देखा जाए तो प्राइस से अर्निंग रेशियो होता है। प्राइस से अर्निंग रेशियो 15 से 25 के बीच होता है। जो हर सेक्टर और इंडस्ट्री का अलग–अलग होता है। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि यह अच्छा है या यह नहीं अच्छा है। 15 से 25 के बीच है तो हम इन्वेस्टमेंट के बारे में सोच सकते है। अभी यह चीज न ज्यादा महंगी है न ज्यादा सस्ती। इसमें कमाने के मौके होते हैं, जिसके साथ बहुत सारे रेशियोज लगते हैं फंडामेंटल टेक्निकल, क्वांटिटेटिव एनालिसिस एंड न्यूज एनालिसिस। यह पी रेशियो बस एक पैरामीटर है।

सर एक टर्म सुनने में आती है–पेनी स्टॉक, वह क्या चीज है?

पेनी स्टॉक वे कंपनीज होती हैं जिनकी मार्केट वैल्यू पांच हजार करोड़ से लगभग नीचे आ जाती है। कई बार पांच सौ करोड़ रुपए की कंपनी होती है। दो सौ करोड़ रुपए की कंपनी होती है। पेनी स्टॉक का मतलब एक रुपए का स्टॉक, दो रुपए का स्टॉक, मतलब एक छोटा सा बच्चा है, जिसके फ्यूचर को हम प्रेडिक्ट नहीं कर सकते। उनकी सारी चीजें व उनके फ्यूचर को एनालायज करते हैं। इसमें हम डिफरेंट कंपनीज के पहले सेक्टर को चुनते हैं। ऐसे सेक्टर जो आज तक डेवलप नहीं हुए। मगर यह तुक्के पर काम करता है। यह सेक्टर स्पेसिफिक होते हैं। ऐसे में जो फ्यूचर प्रोडक्ट्स हैं और पेनी स्टॉक इन्वेस्टिंग वह है जहां आप उसके फ्यूचर पर पैसे लगा दो।

आजकल एआई का जमाना है। हर काम एआई से पूछकर करने की वकालत लोग कर रहे हैं, क्या स्टॉक मार्केट में भी एआई हमारी मदद कर सकता है? ट्रेडिंग अथवा टिप देने में इसकी भूमिका के बारे में बताइएगा?

एआई हमारे लिए एक बुद्धिमान सेवक है। जैसे कोई अनपढ़ इंसान है, उसको मैं बोलूं कि जाओ एक ग्लास पानी ले आओ। उसके पास अपना एक ह्यूमर है। अपना खुद का एक सेंस है, मगर एआई क्या है? टोटल फ्रॉम की उसको हर एक्शन पर कमांड चाहिए। एक लिनियर कमांड काम तो वह कर देगा। बिलकुल सही कर देगा। ध्यान रहे कि एआई एक बुद्धिमान सेवक है। एक कम दिमाग के आदमी से काम कराना आसान है, मगर अपने से ज्यादा दिमाग वाले से कराना थोड़ा मुश्किल होता है। इस तरह एआई से काम कराने के लिए आपको उसके स्तर का इंटेलेक्चुअल चाहिए। अगर वह वाइज है तो उसको आर्डर देने वाला भी वाइज होना चाहिए। तभी वह अच्छा स्पे. सिफिक काम करके आपको देगा।

स्टॉक मार्केट में हम अपने माइंड को कैसे तैयार करें, किस तरह मैनेजमेंट रखें मार्केट में उतरने से पहले?

मार्केट में इंपोर्टेंट है साइकोलॉजी मैनेजमेंट, क्योंकि रिस्क मैनेजमेंट के लिए टूल्स हैं। आपका अपना जो आर्डर है, अपने आप पर्चेज हो जाएगा। अपने से आप एग्जिट हो सकते हो। मगर यहां पर साइकोलॉजी का अहम रॉल है। आपको पता है कि यह जाएगा। लाभ होगा। फिर भी आपका डर आप पर हावी होता है। इसकी वजह यह है कि यहां पर आपकी कैपिटल लगी है। मार्केट में वोलैटिलिटी इसी तरीके से आती है। एक बात समझने की है कि मुख्य रूप से साइकोलॉजी मैनेजमेंट पर काम करना होता है। जब आपको लाभ हो रहा हो तो लालच मत कीजिए। जब आपको लॉस हो रहा हो तो आपका फियर में भी नहीं आना है। वहां पर आपको अपनी स्ट्रेटेजी पर विश्वास करना होता है। अपने रिस्क को पूरी तरह से मैनेज करना होता है। एक तरह से इसी को साइकोलॉजी कहा जाता है।

आज के दौर में स्मॉल कैप, मिड कैप और लार्ज कैप में से सबसे अच्छा कौन है?

यह वह इंसान देखता है जो इन्वेस्टमेंट करता है। वह मॉडरेट रिस्क लेना चाहता है। हाई रिस्क लेना चाहता है या लो रिस्क लेना चाहता है। अगर कोई बहुत हाई रिस्क लेना चाहता है–हाई रिस्क हाई रिटर्न। यह समझिए कि रिस्क और रिटर्न दोनों क्या हैं। प्रोपोशनल, रिस्क ज्यादा होगा तो रिटर्न ज्यादा होगा। रिस्क कम होगा तो रिटर्न भी कम होगा। इस तरह जो लार्ज कैप इन्वेस्टिंग होती है। लार्ज कैप क्या होती है–जिनकी वैल्यू बढ़ नहीं सकती, कुछ भी वह कर लें। जैसे–जैसे कंपनी बढ़ेगी वैसे–वैसे फंड बढ़ता जाएगा। इनमें रिस्क बहुत कम होता है और रिटर्न बहुत कम होता है। इसके बाद आता है मिड कैप। मिड कैप वह कंपनीज होती हैं जो लार्ज कैप बन सकती हैं। यह हाई ग्रोथ कंपनीज होती हैं और थोड़ा लो रिस्की, मॉडरेट रिस्की होती हैं। मतलब मॉडरेट रिटर्न भी देते हैं। ठीक है। लेकिन उनके रिटर्न लार्ज कैप से ज्यादा होते हैं और रिस्क लार्ज कैप से थोड़ा ज्यादा होता है। इसके बाद आता है स्मॉल कैप। हो सकता है स्मॉल कैप इतना अच्छा रिटर्न दे दे कि साल भर में आपका लाभ पांच गुना हो जाए। दो गुना हो जाए। तीन गुना भी हो सकता है और हो सकता है आपकी कैपिटल को आधी भी कर दे। डिपेंड करता है कि आपने कौन सा स्माल कैप लिया है और आपकी रिस्क कैपेसिटी क्या है, यह देखने की बात है।

वॉकेथॉन के जरिए नशा मुक्त जीवन का संदेश

शिवानी

नई दिल्ली। वर्तमान समय में युवाओं के बीच तेजी से बढ़ती नशे की लत एक गंभीर सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी चिंता का विषय बन गई है। इसी गंभीर चुनौती का मुकाबला करने और समाज में व्यापक जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई की ओर से 26 सितंबर 2025 को एक वॉकेथॉन का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय परिसर से प्रारंभ हुई इस पदयात्रा में विभिन्न विभागों के सैकड़ों विद्यार्थियों और एनएसएस स्वयंसेवकों ने कंधे से कंधा मिलाकर हिस्सा लिया। वॉकेथॉन के दौरान विद्यार्थियों का जोश देखते ही बनता था। उनके हाथों में नशे के दुष्प्रभावों को रेखांकित करती रंग–बिरंगी तख्तियां और बैनर थे, जिन पर लिखे संदेश युवाओं को इस जानलेवा लत के प्रति सचेत कर रहे थे। पदयात्रा के दौरान पूरा मार्ग नशा मुक्त जीवन, सुखी जीवन और युवा शक्ति की एक ही पुकार, नशा मुक्त हो अपना संसार जैसे ओजस्वी नारों से गूंज उठा।

रामलाल आनंद महाविद्यालय के एनएसएस ने नशा मुक्ति के लिए वॉकेथॉन का आयोजन किया।

विद्यार्थियों ने सड़क पर चल रहे राहगीरों और स्थानीय निवासियों को रोककर नशे के घातक शारीरिक, मानसिक और आर्थिक परिणामों के प्रति जागरूक किया। कॉलेज परिसर से शुरू होकर यह वॉकथॉन दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैंपस के प्रमुख मार्गों से होते हुए कैंपस में संपन्न हुई। इस जनजागरूकता अभियान का नेतृत्व एनएसएस संयोजक डॉ. अनुराग शर्मा और समिति अध्यक्ष अथर्व गंभीर ने किया।

समापन सत्र के दौरान विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. अनुराग शर्मा ने कहा कि नशा न केवल एक व्यक्ति को बल्कि पूरे परिवार और राष्ट्र की नींव को खोखला कर देता है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि एक नशा मुक्त समाज का निर्माण ही देश की वास्तविक उन्नति और सुदृढ़ भविष्य का आधार है। समिति अध्यक्ष अथर्व गंभीर ने युवाओं से अपनी असीमित ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों और राष्ट्र निर्माण में लगाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के समापन पर वहां मौजूद बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने एक स्वर में समाज को इस सामा. जिक बुराई से बचाने और स्वयं को हर प्रकार के व्यसन से दूर रखने का पवित्र संकल्प लिया।

विद्यार्थियों की इस सामूहिक भागीदारी और समर्पण ने इस आयोजन को महज एक यात्रा से बदलकर एक प्रभावी सामाजिक मुहिम का रूप दे दिया, जिसकी परिसर और आसपास के क्षेत्रों में काफी सराहना की गई।

बच्चों को बताया गया पढ़ाई का महत्व

निधि

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग और संकल्प एनजीओ ने 25 सितम्बर 2025 को वंचित बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए एक रचनात्मक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आउटरीच पहल के अंतर्गत आयोजित चित्रकला से बच्चों ने अपनी कल्पनाओं और भविष्य के सपनों को कैनवास पर रंगों के माध्यम से उकेरा, जिसमें कॉलेज के विद्यार्थियों ने भी बढ़–चढ़कर उनका सहयोग किया।

इस अवसर पर संयोजिका प्रेमलता और सुश्री अंजलि के मार्गदर्शन में बड़ी संख्या में छात्र मौजूद रहे, जिन्होंने बच्चों को शैक्षिक सामग्री वितरित कर उन्हें निरंतर सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रयास ने न केवल बच्चों के चेहरों पर मुस्कान बिखेरी, शिक्षा के प्रति सकारात्मक संदेश भी प्रसारित किया। इसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

लद्दाख में जलवायु परिवर्तन अहम मुद्दा

आलोक यादव

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से बदलती वैश्विक व्यवस्था में स्वदेशी की व्याख्या विषय पर अलुमनाइ टॉक का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता और विभाग के पूर्व छात्र रोहिन कुमार ने लद्दाख का उदाहरण देते हुए सचेत किया कि जलवायु परिवर्तन के साथ बढ़ता वैश्वीकरण और बहुराष्ट्रीय निगमों का हस्तक्षेप पारिस्थितिक तंत्र के लिए बड़ी चुनौती बन रहा है।

उन्होंने रेखांकित किया कि बड़े पैमाने पर हो रहे औद्योगिक व तकनीकी बदलावों ने स्थानीय पहचान और पर्यावरण के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न कर दिए हैं। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने स्वदेशी मॉडल को अपनाने पर बल दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं ने भागीदारी कर वैश्विक व्यवस्था में हो रहे बदलावों को समझा। इस अवसर पर विभाग के संयोजक डॉ. कप्तान सहित डॉ. जतिन, डॉ. सोमा, डॉ. अलंकार और डॉ. विजय भाटिया जैसे वरिष्ठ शिक्षक उपस्थित रहे।

नवागंतुक विद्यार्थियों को बताई समिति की खूबियां

खुशी प्रजापति

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग की ओर से 26 सितंबर 2025 को विभाग की समिति माइक्रोबायोलॉजिका के परिचय समारोह एवं साक्षात्कार सत्र का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य विभाग में आए प्रथम वर्ष के नवागंतुक विद्यार्थियों को समिति की कार्यप्रणाली से परिचित कराना और उत्साही विद्यार्थियों का समिति के तहत चयन कर उन्हें विभागीय गतिविधियों से जोड़ना था।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए समिति की संयोजिका डॉ. शालिनी स्वामी ने माइक्रोबायोलॉजी के लक्ष्यों, विभाग के अनुभवी शिक्षकों और भविष्य में अकादमिक व सह–पाठयक्रम क्षेत्र में समिति के महत्वपूर्ण योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। महाविद्यालय की उपप्राचार्य एवं वरिष्ठ शिक्षिका प्रो. प्रेरणा दीवान ने विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाते हुए इस समिति को व्यक्तित्व विकास के लिए एक अनूठा मंच बताया। विभाग की शिक्षिका और उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान ने भी संबोधित किया।

प्रो. प्रेरणा दीवान

उन्होंने टीम वर्क और सफल इवेंट मैनेजमेंट के महत्व को साझा करने के साथ–साथ विद्यार्थियों को लैब में शोध और प्रयोगों के दौरान सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन करने की विशेष सलाह दी। साथ ही साक्षात्कार के माध्यम से प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों की प्रतिभा को परखा गया। इस अवसर पर विभाग की शिक्षिका डॉ. सुनीला हुड्डा सहित विभाग के कई शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

पर्यावरण को अपनाएं जीवन में बदलाव लाएं

अंकेश स्वर्ण

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्याल की द ग्रीन कैम्पस समिति ने 12 सितंबर 2025 को स्पीकर सेशन का आयोजन करवाया, जिसका विषय नेचर इन द सिटी : ब्रीदिंग स्पेस विद तपस रहा। मुख्य अतिथि रामानुजन महाविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. गौरव बड़ोदिया ने विद्यार्थियों को बताया कि पर्यावरण से जितनी निकटता होगी, उतने ही जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव आते हैं।

विद्यार्थियों का पर्यावरण के बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्होंने बताया कि उनके दिशा निर्देश एवं प्रयास से रामानुजन महाविद्यालय के एक अनुपयोगी कोने को रिस्टोरेशन किया। उनकी मिनी जंगल–तपस को प्रदर्शित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि महाविद्यालय स्तर पर शिक्षक हों या विद्यार्थी, सभी को अपने स्तर पर पर्यावरण के संरक्षण और विकास के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। इस दौरान समिति के संयोजक दीपक सेतिया, सह–संयोजक निधि यादव और समिति के अध्यक्ष हर्षित कपूर सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पाथवे देता है हर साल नए रोजगार के मौके

- बेहतर करियर की दिशा तय करते हैं संवाद सत्र
- विद्यार्थियों को भर्ती प्रक्रिया की जानकारी दी

नंदनी वार्ष्णेय

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल 'पाथवे' की ओर से 9 सितंबर 2025 को एक विशेष 'मीट एंड ग्रीट' सत्र का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बीते 3 सितंबर को हुए ओरिएंटेशन सत्र की अगली कड़ी के रूप में रखा गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य नए विद्यार्थियों के मन में करियर और प्लेसमेंट से जुड़े तमाम सवालों और शंकाओं का समाधान करना था।

सत्र के दौरान समिति की कॉर्पोरेट एवं नेटवर्क प्रमुख रिया और डाटा एवं संचार प्रमुख सक्षम जैन ने विद्यार्थियों के साथ सीधा संवाद किया और उन्हें पाथवे की कार्यप्रणाली से विस्तार से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि पाथवे सेल समय–समय पर मुथूट फाइनेंस और बजाज जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों के साथ मिलकर प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन करता है। इस संवाद सत्र में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने पाथवे सेल में शामिल होने के लिए आगामी ऑडिशन, चयन प्रक्रिया और कंपनी भर्ती के मानकों को लेकर गहन चर्चा की। छात्र–छात्राओं ने जाना कि किस तरह सेल के विभिन्न विभाग अपनी–अपनी विशिष्ट भूमिकाओं के अनुसार कार्य करते हुए विद्यार्थियों को कॉर्पोरेट जगत के लिए तैयार करते हैं।

कार्यक्रम के दौरान समिति के संयोजक डॉ. पवन कुमार और सह–संयोजिका सुश्री सृजना सिंह भी उपस्थित रहीं, जिन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए बताया कि ऐसे संवाद सत्र भविष्य में बेहतर करियर निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होते हैं।

यह आयोजन न केवल सूचनात्मक रहा बल्कि इसने विद्यार्थियों को प्लेसमेंट सेल के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने और अपनी व्यावसायिक क्षमताओं को ठीक से निखारने के लिए प्रेरित किया।

भावनाओं को व्यक्त करता है हर एक फोटोग्राफर

समर्थ

नई दिल्ली। समिति का अर्थ केवल तस्वीरें लेना नहीं बल्कि हर तस्वीर के पीछे एक कहानी होती है चाहे वह धुंधली और टेढ़ी क्यों न हो। फोटोग्राफी एक तरह का संचार है। जिस तरह कवि अपनी कविता के माध्यम से लोगों को अभिव्यक्त करता है, वैसे ही फोटोग्राफर अपनी तस्वीरों के माध्यम से लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। अच्छा संचार हमेशा अनुशासन से आता है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 26 सितम्बर 2025 को दृश्यम द फिल्म एंड फोटोग्राफी समिति के ओरिएंटेशन में समिति के सह संयोजक अरुण कुमार ने कही। मंच का संचालन करते हुए देव ने कहा कि फोटोग्राफी केवल तस्वीरें खींचने का नाम नहीं, कहानियां गढ़ने, विजुअल बनाने और रचनात्मकता को जोड़ने की कला है। उन भावनाओं और रचनात्मकता के बारे में है जो हकीकत से मिलती हैं। आरोही ने मंच संचालित करते हुए समिति सदस्यों का बनाया स्नैपशॉट्स वीडियो विद्यार्थियों को दिखाया। साथ ही सिनेमा चैलेंज प्रश्नोत्तरी आयोजित की, जिसमें विद्यार्थी एवं शिक्षकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। 10 विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता के शिक्षक प्रो. राकेश कुमार, समिति संयोजक भुक्या राजेंद्र सहित कई विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पर्यावरण संरक्षण के लिए छोटे कदम उठाएं

योगेश यादव

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में वसुधा क्लब की ओर नए शैक्षणिक सत्र के नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को प्रकृति के करीब लाना और उन्हें पर्यावरण प्रहरी के रूप में तैयार करना था।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए क्लब की संयोजिका डॉ. दीप्ति गुप्ता ने कहा कि वसुधा द्वारा आयोजित पर्यावरणीय क्विज महज एक शैक्षणिक प्रतियोगिता नहीं है, यह विद्यार्थियों को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों का बोध कराने और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम है।

छोटे–छोटे प्रयास ले लेते हैं बड़े अभियान का रूप।

उन्होंने कहा कि आज के दौर में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता समय की मांग है। इसी मुहिम को आगे बढ़ाते हुए एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के कुल 45 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान पूछे गए प्रश्न जलवायु परिवर्तन और सतत विकास जैसे महत्वपूर्ण वैश्विक विषयों पर आधारित थे। विद्यार्थियों ने प्रत्येक सवाल का तार्किकता के साथ उत्तर दिया, जिससे उनकी वैश्विक संकटों के प्रति सजगता दिखाई दी। इस प्रतियोगिता में अर्पित सिंह और आदित्य सिंह की टीम ने अपनी मेधा का परिचय देते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में निधि और सुजल की जोड़ी दूसरे पर रही। इसी तरह आदित्य कुमार और शशांक सिंह की टीम ने तीसरा स्थान हासिल किया। सभी विजेताओं को मुख्य अतिथियों की ओर से प्रमाणपत्र और विशेष पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समिति के वरिष्ठ सदस्यों ने सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि पर्यावरण रक्षा के लिए केवल बड़े आंदोलनों की प्रतीक्षा न करें बल्कि हम सभी की ओर से दैनिक जीवन में उठाए गए छोटे–छोटे हरित कदम जैसे कचरा प्रबंधन एक बड़े बदलाव की नींव रख सकते हैं। समापन सत्र में शिक्षक डॉ. वीरेन्द्र बहादुर सिंह और डॉ. विजय भाटिया ने विद्यार्थियों का विशेष मार्गदर्शन किया।

रामलाल आनंद महाविद्यालय के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम, सीईएमसीए और रिलायंस फाउंडेशन के तत्वावधान में हुए आयोजन में प्रतिभागी।

आरएलएसी में 'सामुदायिक रेडियो के लिए तकनीक सक्षम भविष्य' विषयक कार्यशाला

डिजिटल टूल्स बदलेंगे रेडियो की तस्वीर

आयुष प्रजापति/अंशिका वर्मा

- सामुदायिक रेडियो स्टेशन के संचालकों ने रेडियो के तकनीकी पहलुओं को सीखा
- रिलायंस फाउंडेशन के इंटरनेट रेडियो पर प्रोग्राम बनाने, प्रसारण करने के गुर बताए

नई दिल्ली। सामुदायिक रेडियो जनता के जरिए, जनता के लिए व जनता का माध्यम है। यह देश के अलग–अलग क्षेत्र के समुदायों के लिए उभरते संचार का माध्यम बन रहा। कामनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेंटर फॉर एशिया (सीईएमसीए) हर संभव रेडियो स्टेशनों की स्थापना करने में जुटा है। इसके लिए ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में प्रचार प्रसार किया जा रहा है। इसमें सूचना और प्रसारण मंत्रालय का सहयोग है। यह बात सीईएमसीए के डॉ.बी. शार्दक ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 23 सितम्बर 2025 को 'सामुदायिक रेडियो के लिए तकनीक सक्षम भविष्य' विषयक कार्यशाला में कही। महाविद्यालय का सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम, सीईएमसीए और रिलायंस फाउंडेशन मुंबई के संयुक्त प्रयास से कार्यशाला तीन सत्रों में हुई। इससे पहले रिलायंस फाउंडेशन के विभाग प्रमुख सेंथिल कुमारन कृष्णन ने 'डिजिटल टूल्स के माध्यम से सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की पहुंच पर कहा कि सीआरएस की पहुंच, प्रसार के लिए इंटरनेट रेडियो, आईबीआरएस कॉल और व्हाट्सएप आउटरीच जैसी सुविधाओ की जरूरत है।

तकनीकी सत्र में रिलायंस फाउंडेशन ने अपनी इंटरनेट रेडियो की रूपरेखा को पेश किया। इसमें रेडियो प्रोग्राम की प्लेलिस्ट बनाने से लेकर इसके अपलोडिंग, स्ट्रीमिंग और फाइल ट्रांसफर करने तक की प्रक्रिया पर बात की। इसी के साथ लाइव रिकॉर्डिंग, ट्रान्स्क्रिप्शन, प्रसारण और अनुवाद पर बात करते हुए यूट्यूब और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सीआरएस के लिए लाइव स्ट्रीमिंग कैसे करें, बताया गया। सत्र के सूत्रधार रिलायंस टीम के रामेश्वरम कैलाशम रहे।

रामलाल आनंद महाविद्यालय की उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान ने सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम की सार्थकता पर कहा, दिल्ली विवि के एकमात्र सामुदायिक रेडियो स्टेशन तरंग 90.0 एफएम में विद्यार्थी ढेरों विधा के कार्यक्रम बनाते हैं। प्रसारण करते हैं। कार्यक्रमों में सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों, वैज्ञानिक तथ्यों और जागरूकता अभियान के विषय शामिल होते हैं।

सीईएमसीए संस्था के निदेशक डॉ. बी. शार्दक और रिलायंस फाउंडेशन के विभाग प्रमुख सेंथिल कुमारन कृष्णन वर्चुअल मोड से जुड़े। तकनीकी सत्र में रिलायंस फाउंडेशन से नितेश प्रजापति, मो. असलम जुनेजा, रवि महालंकार, जॉय सोय, गुरुमूर्ति और सीईएमसीए से अंकित सिंह ने प्रशिक्षण दिया। हिंदी पत्रकारिता की डॉ. निशा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

शिक्षक और विद्यार्थी में संवाद ही शिक्षा है

निधि

नई दिल्ली। जीवन में आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास, सही दिशा का चुनाव और अपने निर्णयों पर दृढ़ रहना आवश्यक है।

विद्यार्थियों को अपनी वास्तविक रुचियों को पहचान कर उसी के अनुसार भविष्य गढ़ना चाहिए। यह बात पर्सनल और कॅरिअर काउंसलर सुश्री ज्योत्सना मित्तल ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 23 सितम्बर 2025 को द इंग्लिश लिटरेरी समिति यूबिक्विटस में कही। समिति ने डेड पोएट्स सोसाइटी की मूवी स्क्रीनिंग और पैनल डिस्कशन किया।

पैनल डिस्कशन में विद्यार्थियों ने मूवी से संबंधित प्रश्न पूछे। अंग्रेजी विभाग की सुश्री प्रज्ञा देशमुख ने बताया कि यह फिल्म केवल एक कथा नहीं है बल्कि यह युवाओं को स्वतंत्र सोच, आत्म अभिव्यक्ति और सामाजिक परंपराओं से परे जाकर अपने सपनों को पूरा करने की प्रेरणा देती है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विश्वास तथा संवाद ही शिक्षा की असली ताकत है। मंच संचालन काया और चारु ने किया। इस दौरान समिति की संयोजिका सुश्री मिनाक्षी ब्रह्मा, समिति की अध्यक्ष महक सहित अन्य विभाग के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

गांधी के स्वदेशी विचार को किया रेखांकित

अंकेश स्वर्ण

नई दिल्ली। आज की दुनिया में गांधीवादी सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर द इंग्लिश लिटरेरी सोसाइटी यूबिक्विटस ने भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करवाया। इस दौरान प्रतिभागियों को पांच मिनट की समय सीमा दी गई।

भाषण के दौरान प्रतिभागियों ने गांधी जी के सत्य, अहिंसा, सामान्य जीवन शैली और स्वदेशी विचारधारा पर वर्तमान समय की घटनाओं से जोड़ते हुए अपनी बातें रखीं। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शहीद भगत सिंह महाविद्यालय के विद्यार्थी सक्षम कुचेरिया ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान रामलाल आनंद महाविद्यालय की दिव्यांशी और तृतीय स्थान पर श्री अरविंदो महाविद्यालय के मलिक ठाकुर रहे। निर्णायक की भूमिका पुरुषोत्तम मिश्रा ने निभाई। विजेताओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम के दौरान समिति की संयोजिका सुश्री मीनाक्षी ब्रह्मा, अध्यक्ष महक गोयल सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हर क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ रही है भूमिका

आईक्यूएसी के आयोजन में शिक्षिकाओं ने सशक्तीकरण का संदेश दिया।

माही शर्मा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में महिला कल्याण सलाहकार समिति और आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सलाहकार डॉ. सुधा चौधरी ने 22 सितंबर 2025 को छात्राओं के संबोधित करते हुए कहा कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं, लेकिन उनकी असली ताकत शिक्षा और आत्मविश्वास में निहित है।

छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि वे स्वयं को किसी से कम न समझें और अपनी प्रतिभा से समाज में नई पहचान बनाएं। कार्यक्रम में छात्राओं को आत्मनिर्भर बनने और चुनौतियों का डटकर सामना करने के मंत्र दिए गए। इस दौरान आयोजित गतिविधियों में छात्राओं ने नारी शक्ति को प्रदर्शित करते हुए समाज में उनकी बदलती भूमिका को रेखांकित किया। नए विद्यार्थियों के लिए यह सत्र न केवल स्वागत समारोह था, बल्कि भविष्य के लिए एक प्रेरणादायक शुरुआत भी साबित हुआ। मंच संचालन उजाला यादव और त्रिप्ती ने किया। इस मौके पर कई प्रतियोगिताएं भी हुईं, जिसमें शिक्षिकाओं ने भी शिरकत की।

क्विज और दीवाली उत्सव में दिखा जोश

दीपिका

नई दिल्ली। कंप्यूटर साइंस की विभागीय सोसाइटी ई–पीपल ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में 15 अक्टूबर 2025 को एक्सटेंपर–एआई प्राइवेसी एंड पावर और क्विज बैटल्स ऑफ बाइट्स एंड ब्रेनस नाम से क्विज का आयोजन किया। इसमें कंप्यूटर साइंस से संबंधित प्रश्न पूछे गए। विजेताओं का चयन उत्तरों की सटीकता और समय के आधार पर किया गया। इसमें प्रतिभागियों को ई–सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

इसी दौरान कंप्यूटर साइंस के विद्यार्थियों ने दीवाली उत्सव का भी आयोजन किया। इसमें ई–सेल टीम के सदस्य, शिक्षक मिस दीक्षा सपरा, मिस साक्षी शर्मा और डॉ. शिखा वर्मा ने भाग लेते हुए खेलों का आनंद लिया। कार्यक्रम में प्रो. वंदना गंडोत्रा, प्रो. नीरज कुमार शर्मा, डॉ अरुण गौतम, डॉ. प्रदीप सिंह और मिस मनीषा वाधवा मौजूद रहे। ई–पीपल की संयोजिका डॉ साक्षी खन्ना, उपाध्यक्ष स्तुति, सचिव तनिश कुमार और संयुक्त सचिव दीपांशु सिंह रावत ने आयोजन में मुख्य भूमिका निभाई।

चित्रकार की तरह होता है विद्यार्थी

आकाश

हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार के साथ शिक्षक व विद्यार्थी।

नई दिल्ली। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की ओर से विद्यार्थियों के स्वागत और उनकी बहुमुखी प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से टैलेंट हंट का आयोजन किया गया। 22 सितंबर को आयोजित इस कार्यक्रम में भविष्य के पत्रकारों ने अपनी रचनात्मकता, बौद्धिक क्षमता और सांस्कृतिक कौशल का परिचय दिया।

विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने विद्यार्थियों में जोश भरते हुए कहा कि हर विद्यार्थी के भीतर एक कलाकार और एक विशिष्ट दृष्टिकोण छिपा होता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षक का कार्य केवल मार्ग दिखाना है, लेकिन उस मार्ग पर चलकर सफलता के शिखर तक पहुंचना विद्यार्थी के अपने जुनून और मेहनत पर निर्भर करता है। समारोह का शुभारंभ विभाग की पिछले वर्ष की उपलब्धियों और गतिविधियों पर आधारित एक वीडियो प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसने नवागंतुकों को पत्रकारिता के व्यावहारिक पहलुओं से रूबरू कराया।

मुख्य प्रतियोगिता को दो महत्वपूर्ण चरणों में विभाजित किया गया था। पहले चरण में नए विद्यार्थियों ने मौलिक अंदाज में अपना परिचय दिया, जिससे उनके व्यक्तित्व की झलक देखने को मिली।

दूसरे चरण में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें करंट अफेयर्स पर आधारित कठिन सवालों के माध्यम से विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान और मानसिक सजगता को परखा गया। निर्णायक मंडल की जिम्मेदारी निभाते हुए डॉ. अटल तिवारी और डॉ. सीमा भारती ने सूक्ष्म अवलोकन के बाद परिणामों की घोषणा की। रिया कुमारी और आलोक यादव ने अपने शानदार प्रदर्शन से टैलेंट हंट में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सांस्कृतिक रंग को और गहरा करते हुए श्रेया, आलोक और कृष्णा ने अपनी सुरीली आवाज में गीतों की प्रस्तुति दी।

विभाग की ओर से नए विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें स्मृति चिह्न के रूप में की–चेन और बुकमार्क भेंट किए गए। कार्यक्रम का मंच संचालन भूमिका शार्दुल और खुशी प्रजापति ने किया। इस अवसर पर हिंदी पत्रका. रिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, डॉ. प्रदीप कुमार और डॉ. निशा सिंह सहित विभाग के चारों वर्षों के विद्यार्थी उपस्थित रहे। यह आयोजन विद्यार्थियों के बीच मेलजोल बढ़ाने का जरिया बना। विद्यार्थियों को आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने का एक मंच मिला।

इनारा समिति के आडिशन में दिखा मंडला कला का प्रदर्शन

शिवानी

नई दिल्ली। महाविद्यालय की इनारा समिति की ओर से 22 सितंबर 2025 को आयोजित ऑडिशन में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक और चित्रकला प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस चयन प्रक्रिया में 32 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिन्होंने अपनी कलाकृतियों में विविध आकृतियों के साथ–साथ विशेष रूप से मंडला कला की बारीकियों को बेहद खूबसूरती से उकेरा। विद्यार्थियों को अपनी पोर्टफोलियो जमा करना अनिवार्य था।

समिति की संयोजिका प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार और सह–संयोजिका डॉ. सलोमी एम. जॉन की देखरेख में आयोजित इस सत्र ने नवागंतुक कलाकारों को अपनी मौलिकता प्रदर्शित करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया। इस दौरान समिति के वरिष्ठ सदस्यों ने प्रत्येक कृति का सूक्ष्मता से अवलोकन किया। उन्होंने साथियों की रचनात्मकता की सराहना की।

महाविद्यालय की इनारा समिति के आयोजन में विद्यार्थियों की रचनात्मक चित्रकला देखने को मिली।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

आशीष कुमार राणा

उपसंपादक

भारती